

□□□□□□ □□□□

जनसत्ता 5 जून, 2014 : जैसे जीवन में वैसे ही राजनीति में भी सफलता हासिल करने के बाद अगर कबार भी

किसी पार्टी के किसी नेता के भारी वफादारी मिलती है तो उसे इसकी वही तरह से भारी कीमत चुकानी पती है। वफादारी होते ही पार्टी के वही नेताओं समेत हर कोई उस नेता के चमकीले उधेरे पर उतारू हो जाता है और वही तो मार-मार कर उसका कर्मर नकिलने के चक्कर में रहते हैं। वही तो अचानक भेरे से इतने खतरनाक शेर बन जाते हैं कि बबबर शेर भी उन्हें देख कर डर जाता है और वही आसपास अगर जंगल बचे हों तो वहां वरना किसी चड़ियाघर के पजिरे में घुस कर अपने प्राण बचाता है। और अगर कोई नेता सफल हो गया और नरेंद्र मोदी की तरह उम्मीद से भी ज्यादा सफल हो गया तो फिर कल के नदिक भी 'जनमत का सम्मान' करने के बहाने अहरनशि सुतुतगान शुरू कर देते हैं, आदमी से उसे भगवान बना देते हैं, हर-हर मोदी करने लगते हैं।

इन दोनों बातों के ताजा संदर्भ में क ओर कांग्रेस और आम आदमी पार्टी और दूसरी तरफ भाजपा- नरेंद्र मोदी के मामले में विशेष रूप से देखा-समझा जा सकता है। आपके अपने ही लोग, जो कल तक सेवक के भी सेवक की तरह पेश आया करते थे, आपका उगालदान उठाना तक अपना सौभाग्य मानते थे, वे ही ऐसी-ऐसी गालियां देने लगते हैं और हमने पहले ही कहा था कि शैली में इतना सारा ज्ञान आयातित करके बघारने लगते हैं कि शरमदार नेता हो तो चुल्लू भर पानी में डूब जा, हालांकि राजनीति में इतने शरमदार आजकल नेता होते नहीं और शायद ऐसा होना आज की परिस्थिति में ठीक भी हो, क्योंकि जो आज किसी के गालियां दे रहे हैं, वे भी अक्सर कम बेशरम नहीं होते, बल्कि हो सकता है जसि गाली दे रहे हों, उससे वही-वही गुना ज्यादा बेशरम-बेहया हों।

कोई कांग्रेसी इन दिनों राहुल गांधी के करतून बता रहा है तो कोई उन्हें क्या उपदेश दे रहा है, कोई क्या कल तक जनिहें बलिकुल इस बात का अंदाजा नहीं था कि राहुल बलिकुल बेकर नेता है या अगर था भी तो बोलने की हिम्मत नहीं पती थी, वे आज जो भी मुंह में आ रहा है वह बोलने लगे हैं। इसी तरह जहां देखो, वहां राहुल-केजरीवाल की जम कर मरम्मत हो रही है। केजरीवाल जो करें या जो न करें, वह सब कुछ नदिनीय है। राहुल-सोनिया के नीचा दखिाने के ली। आजकल मनमोहन सहि में भी वे तमाम गुण देखे जा रहे हैं, जो शायद उनमें होंगे या नहीं होंगे।

मुझे तो पहले भी लगता था और अब भी लगता है कि मनमोहन सहि जीवन-भर क अच्छे आज्ञाकारी नौकरशाह बने रहे, जनिहोंने प्रधानमंत्री बनने के बाद भी अपना यह मूल स्वरूप नहीं खोया। वे अपने हर राजनीतिक आका से पटरी बठाकर अपना रास्ता आगे बनाते रहे और सफलता की ऊंची से ऊंची सीं थिं चं ते गं। अब जब सफलता की सारी सीं थिं लगभग वे चं चुके हैं, इन दिनों भी वे प्रशंसा के ऊंचे पायदान पर अवस्थिति है, और क्या पता मोदी-कल में भी वे वही खुशी-खुशी सामंजस्य बठा कर कुछ पा जां।

ऐसा नहीं है कि इस बार कांग्रेस की नैया डुबाने के लिए सोनिया-राहुल ही ज़िम्मेदार थे और मनमोहन सिंह प्रधानमंत्री होने के बावजूद बेचारे बलिकुल पाकसाफ़ थे, मगर मां-बेटे के खिलाफ़ इस्तेमाल करने के लिए कांग्रेस के वरिष्ठियों को मनमोहन सिंह से बेहतर कोई हथियार नहीं मिला, क्योंकि वे राजनीतिक रूप से लगभग क्या पूरी तरह ही ख़त्म हुए जाते हैं। जबकि कौन नश्वरित रूप से आज जानता है कि भविष्य में राहुल-सोनिया समस्या नहीं बनेंगे, इसलिए ये तो तब तक बुरे बने रहेंगे जब तक कि ये पुनः सत्ता न पा जायें या राजनीतिक दृष्टि से बलिकुल अप्रासंगिक हो जायें। मगर मनमोहनजी चूंकि इनके आज्ञाकारी सेवक बनने की छवि बना रहे, इसलिए अब भविष्य में किसी के लिए भी असुवधाजनक बनने की हद से बाहर जा चुके हैं।

इसलिए 2009 में भाजपा के जो अब तक के सबसे कमजोर प्रधानमंत्री लग रहे थे, अब भले आदमी के रूप में नजर आ रहे हैं और वैसे भी आज्ञाकारी अधिकारी से किसी के क्या परेशानी हो सकती है। और अगर तत्कालीन प्रधानमंत्री के सारे फैसले जब सोनिया-राहुल ही लिया करते थे तो ईमानदारी की ये प्रतिभूत जी उस पद पर बैठे-बैठे क्या करती रहती थी- आज्ञापालन? क्या उनको कोई जमीर नहीं था और अगर नहीं था तो इस कारण वे निर्दोष कैसे हो गए ?

आपको याद हो तो 2009 में कांग्रेस की जीत का सेहरा जबर्दस्ती इन्हीं मनमोहन सिंह के सर पर तमाम विश्लेषक बांध रहे थे, तो आज जब कांग्रेस बुरी तरह हार गई है तो हार के लिए केवल सोनिया-राहुल कैसे ज़िम्मेदार हो गए ? ये कैसे साफ़ बच निकले? कोई तार्किक ईमानदारी भी तो होनी चाहिए ?

तो आजकल दनादन इन मां-बेटे के खूब पढ़ रहे हैं, जैसे 2009 में वामपंथियों के पढ़ रहे थे, जो अमेरिका के साथ परमाणु समझौता करने के अपने एक सैद्धांतिक मुद्दे पर यूपीए -1 को अलग हो चुके थे, जिसकी घोषणा वे पहले ही कर चुके थे।

इस कारण या और कई वजहों से उन्हें 2009 के लोकसभा चुनाव में काफी बड़ी चुनावी हार मिली थी। वैसे क्या कीजिए, कुछ तो पूर्व और वर्तमान वामपंथियों ने भी यह फैसला चला दिया है कि नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री बनने से लेकर देश की आज की हर समस्या के लिए आखिरकार वामपंथी पार्टियां ही ज़िम्मेदार हैं। वैसे ऐसा आरोप लगाने वाले कई ऐसे हैं, जो वामपंथियों के दबदबे के युग में पूर्व सोवियत संघ और क्यूबा आदि की बारंबार यात्राएं भी कर चुके हैं और तब उन्हें वामपंथ बलिकुल सही रास्ते पर चलता हुआ दीखता था। कुछ तो इस तरह के भी हैं, जो कहेंगे कि हर शहर में सड़क पर जो गंदगी पड़ी रहती है उसके लिए भी मूल रूप से वामपंथी ही ज़िम्मेदार हैं और अगर इस साल बरसात अच्छी नहीं होती है तो उसके लिए भी वामपंथी ही ज़िम्मेदार सिद्ध की जायेंगे।

लगभग यही हालत आजकल अरवि केजरीवाल की भी हो चुकी है। जब वे पांच महीने पहले दिल्ली के चुनाव में अट्ठाईस सीटें लेकर आए थे तो राहुल गांधी से लेकर मीडिया तक उनका जयकारा बोल रहे थे, भाजपा वाले भी उनसे घबरा कर खुद को सुधारने-बदलने में लगे हुए थे। वसुंधरा राजे सधिया राजसी तामझाम छोड़ कर आम आदमी बनने की असंभव साधना में लगी हुई थीं। मगर आज केजरीवाल से बुरा और गयागुजरा नेता कोई नजर नहीं आ रहा है। हर ताकतवर राजनीतिक पार्टी चाहती है कि यह पार्टी दिल्ली से जैसे भी हो जल्दी से फना हो जाय। तार्किक पुराना खेल चलता रहे। मीडिया भी ठीक यही चाहने लगा है, कांग्रेस-भाजपा भी।

केजरीवाल आज कुछ भी करें, वह शूर होने से पहले ही गलत होने लगता है, ड्रामेबाजी, नौटंकी होने लग जाता है और कल तक ये ही उनके ऐसे मुरीद बने हुए थे कि जैसे भारतीय राजनीति में कोई अवतारी पुरुष पैदा हो गया है, जो कांग्रेस-भाजपा समेत सबकी सारी राजनीतिक गंदगी को अपनी झाड़ू से कहीं झटके में बुहार ले जायगा और सारे दुष्टों को कहीं कहीं बार में अपनी राजनीतिक झाड़ू से दलन कर देगा। तब उनके खिलाफ बोलना साहस की बात होती थी, आज उनकी प्रशंसा करना जघन्य अपराध बन चुका है। मैं अगर भाग्यवादी होता तो कहता प्रभु यह वधिकाँ की कैसी वडिंबना है।

हमारा यह क्त्ई कहना नहीं है क् हारे हुआं के सभी के बख्शना चाहँ, उनकी पार्टी में इस पर बहस तक नहीं होनी चाहँ, कमियों-कमजोरियों पर मीडिया में और बाहर चर्चा नहीं होनी चाहँ और सारी चर्चा फलतू और बेमतलब होती है। सवाल सरिफ यह है क् ऐसा करने वाले खुद से भी तो यह सवाल पूछ लिया करें कभी-कभी क् क्ल वे खुद क्या कह और मान रहे थे और आज क्या कह और कर रहे हैं। क्ल तक मीडिया के इनकी प्रशंसा करना टीआरपी बँाने वाला लग रहा था तो आज इनकी नदिा करने से टीआरपी बँाई जा रही है।

मीडिया के सारी सुवधिया और पूरी स्वतंत्रता है, मगर यही सुवधिया इन नेताओं के नहीं है क् हार ग। तो तुरत पलटवार करने लग जा। ये तो पटाई खाने, गालियां खाने के लँ ही आज बने हैं। ये तो अब कह नहीं सक्ते क् मेरी कोई गलती नहीं थी, गलती तो जनता की है या क्ल जो मेरी कमियां-कमजोरियां गनाने क साहस नहीं कर रहे थे, गलती दरअसल उन्हीं की है। और मान लो नरेंद्र मोदीजी इस लोकसभा चुनाव में खुदा-न-खास्ता पटि जाते तो उनक भी यही हाल होना तय था। ये टीवी चैनल जो आज उनकी प्रशंसा के दौं में झीनाझपटी करने पर उतर आ है, वे ही करोँ के वजिापन डकर जाने के बाद उनके, उनकी पार्टी के भयंकर नदिकबन जाते और धर्मनरिपेक्शता की दुहाई देने लगते, 2002 जो आज बलिकुल भी याद नहीं आ रहा है, वह बार-बार याद आने लगता।

मजा यह है क् तमाम टीवी ंकर और विश्लेषक चुनाव से पहले भी ज्ञानी बने रहते हैं और बाद में और ज्यादा ज्ञानी बन जाते हैं। उन्हें पहले भी सब मालूम होता है और बाद में भी। वे हमेशा 'जनता के साथ' होते हैं, भले ही जनता ने उनके साथ रहने-जीने की क्म कभी न खाई हो। दरअसल, वे हमेशा जीतने वाले के साथ होते हैं। उनसे बँा शर्मनाक चरतिर तो राजनीति करने वालों क भी शायद नहीं होता होगा, मगर उनकी प्रतषिठा-रुतबा आदि जो भी उनके पास होता है कहीं या नहीं होता है, वह सब वैसा ही बना रहता है, उनकी इस बेशरमी के कोई बेशरमी भी नहीं मानता।

फेसबुक पेज के लाइक करने के लँ क्लिक करें- <https://www.facebook.com/Jansatta>

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लँ क्लिक करें- <https://twitter.com/Jansatta>